

भगत रामानंद – सबद १  
कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ॥  
रागु बसंतु हिंडोलु, भगत रामानंद, गुरु ग्रंथ साहिब, ११९५

कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ॥  
मेरा चितु न चलै मनु भइओ पंगु ॥१॥ रहाउ ॥  
एक दिवस मन भई उमंग ॥  
घसि चंदन चोआ बहु सुगंध ॥  
पूजन चाली ब्रह्म ठाइ ॥  
सो ब्रह्म बताइओ गुर मन ही माहि ॥१॥  
जहा जाईऐ तह जल पखान ॥  
तू पूरि रहिओ है सभ समान ॥  
बेद पुरान सभ देखे जोइ ॥  
ऊहां तउ जाईऐ जउ ईहां न होइ ॥२॥  
सतिगुर मै बलिहारी तोर ॥  
जिनि सकल बिकल भ्रम काटे मोर ॥  
रामानंद सुआमी रमत ब्रह्म ॥  
गुर का सबदु काटै कोटि करम ॥३॥१॥

**सार:** सत्य भीतर ही निहित है। यह गहन वाक्य रेखांकित करता है कि हमारी सबसे गहरी अंतर्दृष्टि और समझ बाहरी प्रभावों या कर्मकाण्डों से नहीं बल्कि हमारे भीतर से उत्पन्न होती है। हमारी आंतरिक चेतना अमूल्य मार्गदर्शन को अपने भीतर संजोए रखती है। जब हम अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानते हैं तब हमारे भीतर अद्भुत अंतर्दृष्टियाँ प्रकट होती हैं। आंतरिक आत्मा से जुड़ना हमें विशिष्ट दृष्टिकोण और गहन सत्य प्रदान करता है जो हमारे संदेह और कमज़ोरियों को दूर कर जीवन को सकारात्मक रूप से रूपांतरित कर सकता है। इस यात्रा में शामिल होना हमें उस अविश्वसनीय क्षमता का उपयोग करने की शक्ति देता है, जो हमारे भीतर ही विद्यमान है।

कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ॥

जब ज्ञान की चमक स्वयं के भीतर ही विद्यमान है तो फिर आध्यात्मिक ज्ञान के लिए कहीं और क्यों भटकना चाहिए। यह ऐसा मोड़ है जहाँ बाहरी खोज समाप्त हो जाती है क्योंकि मन यह पहचान लेता है कि उस परम तत्व का सार तो पहले ही भीतर से प्रकट हो रहा है।

मेरा चित्तु न चलै मनु भइओ पंगु ॥ १॥ रहाउ ॥

मेरा चित्त विचलित नहीं होता और मेरे मन के विचार अब शांत और स्थिर हो गए हैं। यह उस आंतरिक शांति को दर्शाता है जो तब उत्पन्न होती है जब हमारी चेतना आत्म-साक्षात्कार में लीन हो जाती है। (१)(विराम)

एक दिवस मन भई उमंग ॥

एक दिन, मेरे मन में एक तीव्र उमंग जागी। यह किसी अधिक अंतरंग, सूक्ष्म और अर्थपूर्ण चीज़ की ओर उठने वाली गहरी लालसा और आकर्षण को दर्शाता है।

घसि चंदन चोआ बहु सुगंध ॥

मैंने चंदन के लेप को कई सुगंधित तेलों के साथ मिलाया। यह उन कर्मकांडीय प्रथाओं का प्रतीक है जिन्हें किसी धार्मिक संस्था के अनुसार पवित्र माना जाता है।

पूजन चाली ब्रह्म ठाइ ॥

मैं, उस सर्वव्यापी ऊर्जा की पूजा करने के लिए, पूजा-स्थल की ओर चल पड़ी। यह इस भ्रम को उजागर करता है कि वह सर्व-पोषक चेतना किसी एक भौतिक स्थान तक ही सीमित है।

सो ब्रह्म बताइओ गुर मन ही माहि ॥ १ ॥

उस परम सृष्टिकर्ता ने, जो संपूर्ण सृष्टि में ही व्याप्त है, यह रहस्य प्रकट किया कि वह ज्ञान तो स्वयं मनुष्य की चेतना के भीतर ही निवास करता है। इसका तात्पर्य है कि हम जिस चीज़ की खोज कर रहे हैं, वह हमारे भीतर ही पहचान की प्रतीक्षा कर रहा है। (१)

जहा जाईऐ तह जल पखान ॥

साधक जहाँ भी जाता है, वह जल और पत्थरों को पूजा के प्रतीक के रूप में अनुभव करता है। यह दर्शाता है कि सर्वव्यापी चेतना का अनुभव केवल भौतिक प्रतीकों के माध्यम से नहीं किया जा सकता, इसके लिए विचारों में तरलता और सत्यनिष्ठा में दृढ़ता की आवश्यकता होती है।

तू पूरि रहिओ है सभ समान ॥

सर्वव्यापी ऊर्जा सभी रूपों में समान रूप से व्याप्त है। यह पुष्टि करता है कि साधक की यात्रा का उद्देश्य अपनी अंतर्दृष्टि को जागृत करना है ताकि वह सभी प्राणियों और स्थानों में उस उपस्थिति को पहचान सके।

बेद पुरान सभ देखे जोइ ॥

सभी आध्यात्मिक शास्त्रों को खोजा और पढ़ा गया है। इसका अर्थ है कि दार्शनिक और धार्मिक ग्रंथों पर गहन चिंतन किया गया है।

ऊहां तउ जाईऐ जउ ईहां न होइ ॥ २ ॥

हम किसी अन्य स्थान पर तभी जा सकते हैं, जब सर्वव्यापी चेतना हमारे भीतर विद्यमान न हो। यह व्यर्थ की भटकन की निरर्थकता को दर्शाता है क्योंकि हमारी सहज बुद्धि हमारे अपने अनुभवों से प्राप्त ज्ञान में ही निहित है। (२)

सतिगुर मै बलिहारी तोर ॥

मैं उन सत्यपूर्ण अंतर्दृष्टियों पर स्वयं को न्योछावर करता हूँ। यह श्रद्धा उस स्पष्टता की ओर संकेत करती है जो ज्ञान द्वारा प्रदान की जाती है और जो हमें अज्ञानता के अंधकार से निकालकर चेतना के प्रकाश की ओर ले जाती है।

जिनि सकल बिकल भ्रम काटे मोर ॥

जिसने मेरी समस्त कमजोरियों और भ्रम को पूरी तरह से मिटा दिया है। यह पुष्टि करता है कि सचेतनता, ऐसा सद्गुण है जो हमारी अंतरात्मा को उन्नत करता है।

रामानंद सुआमी रमत ब्रह्म ॥

रामानंद कहते हैं कि स्वामी वह सर्वव्यापी चेतना है जो समस्त सृष्टि में विद्यमान है। यह ऐसी अवस्था है जहाँ 'एकत्व' को पूर्ण रूप से आत्मसात कर लिया जाता है।

गुर का सबदु काटै कोटि करम ॥ ३ ॥ १ ॥

सच्चे ज्ञान के शब्द उन लाखों विचारों को नष्ट करने में सहायक होते हैं जो हमें नकारात्मक कर्मों की ओर प्रेरित करते हैं। (३)(१)

**तत्त्व:** भक्त रामानंद भावपूर्ण ढंग से यह बताते हैं कि उनके गुरु किस प्रकार सभी प्राणियों के भीतर विद्यमान सार्वभौमिक ऊर्जा का साक्षात् स्वरूप हैं। यह गहन अंतर्दृष्टि हमारी जीवन-यात्रा को रूपांतरित कर सकती है और हमें अज्ञान के अंधकार से निकालकर चेतना के दीप्तिमान प्रकाश की ओर ले जा सकती है। इस सच्ची प्रज्ञा को आत्मसात करके, हम उन हानिकारक विचारों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं जो अक्सर हमें नकारात्मक कार्यों की ओर प्रवृत्त करते हैं। इस प्रकार, यह हमें अधिक प्रबुद्ध और संतोषजनक जीवन जीने के लिए सशक्त बनाते हैं।

**Oneness In Diversity Research Foundation**

**वेबसाइट: [OnenessInDiversity.com](http://OnenessInDiversity.com)**

**ईमेल: [onenessindiversityfoundation@gmail.com](mailto:onenessindiversityfoundation@gmail.com)**